विशद
लघु गणधर वलय विधान

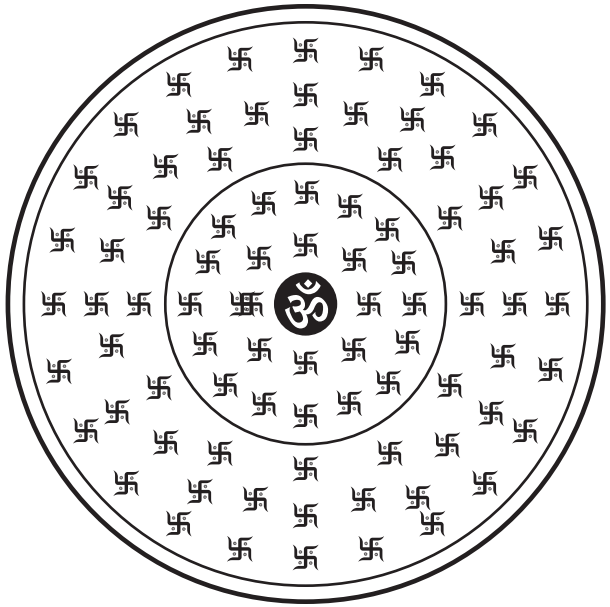

मध्य वलय ॐ
प्रथम वलय - 24
द्वितीय वलय - 48
कुल वलय - 72

रचयिता :
प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति - विशद लघु गणधर वलय विधान

रचयिता - प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण - प्रथम-2018, प्रतियाँ - 1000

सम्पादन . मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सहयोग - आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी
ऐलक श्री विदक्ष सागर जी महाराज
क्षुल्लक श्री विसौम सागर जी महाराज

संकलन - ब्र. ज्योति दीदी-9829076085
ब्र. आस्था दीदी-9660996425
ब्र. सपना दीदी-9829127533, ब्र. आरती दीदी

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जैन सेठी, जयपुर - 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी-09810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाणी - 09416888879
4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली
मो.: 09818115971, 09136248971

पुण्यार्जक - 1. श्री लोकेश जैन, विनय जैन, मनीष, सचिन जैन
जैन आयल मिल, खेरतल, जिला-अलवर (राज.)
मो.: 9414433428

मुद्रक - बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज
एस.बी.बी.जे. के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253, 8561023344

मूल्य - 35/- रु. मात्र

स्तवन

दोहा – चौंसठ ऋद्धी धारते, अर्हत् गणी ऋशीष ।
पूजा अर्चा कर विशद, झुका रहे हम शीश ।।

।। वीर छन्द।।

बुद्धि ऋद्धि से जग जीवों में, बुद्धी का हो पूर्ण विकास।
फैला मोह तिमिर इस जग में, उसका हो जाता है ह्रास।।
बल ऋद्धी के द्वारा तन में, बल की वृद्धी होय अपार।
योद्धा कोई भी आ जावे, मुनिवर से न पावे पार।। 1।।
परम विक्रिया ऋद्धी पाकर, धारण करते रूप अपार।
ऋद्धी धारी मुनि के पद में, वन्दन करते बारम्बार।।
फूल पात तन्तु जल फल पर , चलते चारण ऋद्धीधार।
गगन गमन भी करते मुनिवर, तिन पद वन्दन बारम्बार।।2।।
तपकर तप ऋद्धी प्रगटाते, जिससे तप करते हैं घोर।
उग्र महातप घोर पराक्रम, तप्त दीप्त तपते अतिघोर।।
औषधि ऋद्धीधारी मुनि के, तन का मल हो जाय विशेष।
करने से स्पर्श व्याधियाँ, नशतीं क्षण में शीघ्र अशेष।। 3।।
रस ऋद्धीधारी मुनिवर के, कर में भोजन आते शुद्ध।
सर्व रसों से पूरित होता, मंगलकारी पूर्ण विशुद्ध।।
ऋद्धी है अक्षीण महानश, जिससे वस्तू हो न क्षीण।
अरु अक्षीण महालय ऋद्धी, में आलय होता अक्षीण।। 4।।
आठ ऋद्धियाँ मुख्य कहीं हैं, उनके भेद है अड़तालीस।
चौंसठ भेद भी उनके गाए, पाते हैं जो जैनऋशीष।।
ऋषिवर श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर, भी लेते ना उनसे काम।
निस्पृह वृत्ती धारी साधू, के चरणों में विशद प्रणाम।। 5।।

दोहा – तीर्थंकर गणधर मुनी, ऋद्धीधार ऋशीष।
विशद झुकाते भाव से, जिन चरणों हम शीश।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री गणधर वलय विधान

स्थापना

दोहा – तीर्थंकर गणधर परम, पाए केवलज्ञान।
ऋषी सप्त विध का हदय, करते हम आह्वान ।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। छन्द–चौपाई।।

नीर भराया मंगलकारी, रोग जरादिक का परिहारी।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः जलं नि. स्वा.।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः चन्दनं नि.स्व।

अक्षत यहाँ चढ़ाते भाई, जो है अक्षत सुपद प्रदायी।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः अक्षतं नि.स्व।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः पुष्पं नि. स्वा.।

शुभ नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः नैवेद्यं नि.स्वा.

घृत के पावन दीप जलाएँ, मोह तिमिर हम पूर्ण नशाएँ।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः दीपं नि. स्वा.।

सुरभित धूप जलाने लाए, आठों कर्म नशाने आए।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः धूपं नि. स्वा.।

फल ताजे हम यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महा पदवी को पाएं।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः फलं नि. स्वा.।

अर्घ्य 'विशद' यह पावन लाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
जिन गणधर ऋषि पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

दोहा - देके शांतिधार हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान।
प्रगट होय मेरे विशद, वीतराग विज्ञान।।

।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा - पुष्पों से पुष्पांजली, करते हैं हम आज।
यही भावना है विशद, पाएँ निज स्वराज।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा - लघुनन्दन तीर्थेश के, जिनवाणी के लाल।
परम पूज्य गणराज की, गाते हम जयमाल।।

(विष्णुपद छन्द)

ज्ञान मूर्ति सर्वज्ञ हितैषी, गुरुवर उपकारी।
तीन गुप्ति को वश में करते, गुण अनंत धारी।।
जगत् पूज्य गणधर स्वामी के, चरणों सिरनाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।1।।
हृदय-कमल में आन विराजो, मुक्ती पथ गामी।
सर्व अमंगल हरने वाले, सादर प्रणमामी।।
गुरु अर्चन करते हे भगवन्!, सिद्धालय जाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।2।।
पंचाचार परायण गुरुवर, संयम तप धारी।
चार ज्ञान पाने वाले, हे गुरुवर अनगारी!।।
ज्ञानी ध्यानी परम गुरू से, विशद ज्ञान पाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।3।।
दश धर्मों को हृदय सजाते, हैं बहुश्रुत ज्ञानी।
हे रत्नाकर! ज्ञान प्रदाता, जीवित जिनवाणी।।
उत्तम संयम के धारी तुम चरणों सिर नाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो,पल-पल हम गाएँ।।4।।
धर्म ध्यान में लीन निरन्तर, रत्नत्रय धारी।
हे योगीश्वर! महामुनीश्वर!, गुरुवर हितकारी।।
भूतल के भगवान आपसे, भगवत्ता पाएँ।
गणधर स्वामी के गुण नत हो, पल-पल हम गाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दोहा - गणनायक मुनि संघ के, जैन धर्म के ईश।
भक्ति भाव से चरण में, झुका रहे हम शीश।।

इत्याशीर्वादः

प्रथम वलयः

अर्घ्यावली

दोहा - अर्घ्य चढ़ाते भाव से, गणधर के पद आज।
शिवपद के राही बनें, मिले आत्म स्वराज।।

।। प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

गणधरों के अर्घ्य

(चौपाई छन्द)

गणधर रहे चौरासी भाई, वृषभसेन आदिक सुखदायी।
आदिनाथ के साथ में जानो, सहस चौरासी मुनिवर मानो।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री वृषभनाथस्य 'वृषभसेनादिक' चतुरशीति गणधर चतुरशीति सहस मुनिश्वरभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

सिंहसेन आदिक शुभकारी, नब्बे गणधर मंगलकारी।
अजितनाथ स्वामी के गाए, एक लाख मुनिवर भी पाए।।2।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री अजितनाथस्य 'सिंहसेनादिक' नवति गणधर एक लक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

गणधर एक सौ पाँच बताए, चारुषेण आदिक कहलाए।
सम्भव जिनके मंगलकारी, लक्ष दोय मुनिवर अविकारी।।3।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री संभवनाथस्य 'चारुदतादिक' पंचोत्तरशत गणधर द्वय लक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वा.।

गणधर एक सौ तीन कहाए, वज्रनाभि आदिक शुभ गाए।
अभिनंदन स्वामी के गाए, एक लाख मुनिवर भी पाए।।4।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री अभिनंदन नाथस्य 'वज्रचमरादिक' त्रयाधिकशत गणधर त्रय लक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक सौ सोलह गणधर गाए, अमर आदि मुनि पदवी पाए।
सुमतिनाथ के मंगलकारी, जिनके पद में ढ़ोक हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री सुमतिनाथस्य 'दिक' षोडषाधिकशत गणधर त्रय लक्ष विशंतिसहसा मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

एक सौ दश गणधर शुभ गाए, वज्र चामरादि कहलाए।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, जिनके पद में ढ़ोक हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री पद्मनाथस्य 'वज्रचामरादिक' दशादिक सत गणधर त्रयलक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वा.।

गणधर पंचानवे शुभ जानो, बल आदी अतिशय पहिचानो।
श्री सुपार्श्व जिनके शुभकारी, तीन लाख मुनिवर अविकारी।।7।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री सुपार्श्व नाथस्य 'बलादि' पंचनवति गणधर त्रय लक्ष मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

तीन अधिक नब्बे शुभकारी, दत्तादी गणधर अनगारी।
चन्द्रप्रभु के मंगलकारी, ढाई लाख मुनिवर अविकारी।।8।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री चन्द्रप्रभस्य 'दत्तादिक' त्रिनवति गणधर त्रय लक्ष पंचाशत सहस्र मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गणधर कहे अठासी भाई, 'विदर्भ' आदि अनुपम सुखदायी।
पुष्पदंत के मंगलकारी, लाख दोय मुनिवर अविकारी।।9।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री पुष्पदंतनाथस्य 'विदर्भादिक' अष्टाशीति गणधर द्वय लक्ष मुनीरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक्यासी गणधर शुभकारी, 'अनगारादी' मंगलकारी।
शीतल जिनके शुभ मनहारी, एक लाख मुनिवर अविकारी।।10।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः श्री अनगारादि एकाशीति गणधर लक्षेक सर्व मुनीरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

कुन्थु आदि गणधर शुभ जानो, श्रेष्ठ सतत्तर अनुपम मानो।
श्री श्रेयांस के मंगलकारी, सहस चौरासी मुनि अविकारी।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनस्य कुंथु आदि सप्तसप्तति गणधर चतुरशीति सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मादी छियासठ शुभकारी, वासुपूज्य के शुभ मनहारी।
सहस बहत्तर थे अनगारी, गणधरभी मुनिवर अविकारी।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथ जिनस्य धर्मादि षट्षष्ठि गणधर द्विसप्तति सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - मन्दरादि पचपन कहे, विमलनाथ के साथ।
गणधर अड़सठ सहस मुनि, झुका रहे हम माथ।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनस्य मंदरादि पंचपंचाशत् गणधर अष्टषष्ठि सहस सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तनाथ के जयादिक, गणधर कहे पचास।
अन्य मुनी छ्यासठ सहस, पूरी करते आस।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनस्यजयादिपंचाशत् गणधर षट्षष्ठि सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिष्टादी चालीस त्रय, धर्मनाथ के साथ।
गणधर मुनि चौंसठ सहस, तिन्हें झुकाएँ माथ।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनस्य अरिष्टसेनादि त्रिचात्वारिंशत गणधर चतुःषष्ठि सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्रायुध आदी महा, गणधर थे छत्तीस।
शांतिनाथ के साथ में, बासठ सहस्र मुनीश।। 16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनस्य चक्रायुधादि षट्त्रिंशत् गणधर द्विषष्ठि सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर कुन्थूनाथ के, स्वयंभ्वादि पैंतीस।
साठ सहस्र मुनिराज पद, झुका रहे हम शीश।। 17।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनस्य स्वयंभू आदि पंचत्रिंशत् गणधरषष्ठि सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुम्भादी अरनाथ के, गणधर जानो तीस।
सहस पचास मुनिराज पद, झुका रहे हम शीश।। 18।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनस्य कुंभादि त्रिशत् गणधर पंचाशत सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर मल्लीनाथ के, विशाखादि अठबीस।
अन्य मुनीश्वर जानिए, श्रेष्ठ सहस चालीस।। 19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनस्य विशाखादी अष्टाविंशति गणधर चत्त्वारिंशत सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के आठ दश, मल्ली आदि गणेश।
तीस सहस मुनिराज थे, पाए मार्ग विशेष।। 20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनस्य मल्लि आदि अष्टादश गणधर त्रिंशत सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभादि नमिनाथ के, गणधर सत्रह खास।
बीस सहस मुनि अन्य थे, पूरी करते आस।। 21।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनस्य सुप्रभादि सप्तदश गणधर विंशति सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह नेमीनाथ के, वरदत्तादि गणेश।
सहस अठारह अन्य मुनि, धरे दिगम्बर भेष।। 22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनस्य वरदत्तादि एकादश गणधर अष्टादश सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर पारसनाथ के, स्वयंभ्वादि दश जान।
अन्य मुनी सोलह सहस, हुए गुणों की खान।। 23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ स्वयंभू आदिदश गणधरषोड्श सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह गणधर वीर के, गौतमादि विख्यात।
चौदह सहस मुनीश पद, झुका रहे हम माथ।। 24।।

ॐ ह्रीं श्री वीर जिनस्य इन्द्रभूति गौतमादि एकादश गणधर चतुर्दश सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों तीर्थेश के, गणधर सर्व महान।
चौदह सौ बावन कहे, करते हम गुणगान।।
अष्टाविंशति लाख अरु, अड़तालीस हजार।
सप्त संघ के मुनीपद, वन्दन बारम्बार।। 25।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनस्य द्विपचांशदधिक चतुर्दशशतगणधर एवं अष्टा विशंति लक्ष अष्ट चत्त्वारिंशद सहस्र सर्व मुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय:

दोहा - सर्व ऋद्धियाँ के विशद, भेद हैं अड़तालीस।
पुष्पांजलिं कर पूजते, ऋद्धी धार ऋशीष।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

।। केसरी छन्द ।।

केवलज्ञान ऋद्धि जो पावें ,लोकालोक प्रकाश करावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 1।।

ॐ ह्रीं कैवल्य बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

मन: पर्यय ऋद्धीधर ज्ञानी, होते वीतराग विज्ञानी।।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 2।।

ॐ ह्रीं ऋजुमति विपुलमति मन:पर्यय बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं नि.स्व।

देशावधि ऋद्धी शुभ भाई, ऋषिवर पाते हैं सुखदाई।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 3।।

ॐ ह्रीं देशावधि बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परमावधि ऋद्धी के धारी, ऋषिवर पावन हों अविकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं परमावधि बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

सर्वावधि ऋद्धी जो पाते, फिर वे केवल ज्ञान जगाते।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वावधि बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

कोष्ठ बुद्धि ऋद्धीधर जानो, साधू ज्ञान जगाएँ मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

बीज बुद्धि ऋद्धी जो पावें, पूर्ण शास्त्र का ज्ञान करावें ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋद्धि पादानुसारी ज्ञानी, पावें जग जन की कल्याणी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं पदानुसारी बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋषि संभिन्न श्रोत्रृधर गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋषि प्रत्येक बुद्धिधर गाए, जो जग को सन्मार्ग दिखाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दूर स्पर्श ऋद्धी प्रगटावें, सूर्य चन्द को भी छू जावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं दूर स्पर्श बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दूर आस्वाद ऋद्धी प्रगटावें, स्वाद दूर वस्तू का पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।12।।

ॐ ह्रीं दूर आस्वाद बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दूर घ्राण ऋद्धीधर जानो, दूर गंध को पावें मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।13।।

ॐ ह्रीं दूर घ्राण बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दूरावालोकन ऋद्धी धारी, होते दूरावलोकन कारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।14।।

ॐ ह्रीं दूरावालोकन बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दूर श्रवण ऋद्धी प्रगटावें, दूर शब्द को भी सुन पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।15।।

ॐ ह्रीं दूर श्रवण बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दश पूर्वित्व ऋद्धिधर ज्ञानी, ज्ञान जगाते जग कल्याणी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।16।।

ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

चौदह पूर्व ऋद्धि जो पावें,भाव अर्थ सबको समझावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।17।।

ॐ ह्रीं चौदह पूर्व बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

जो वादित्व ऋद्धि प्रगटावें, परवादी को शीघ्र हरावें
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।18।।

ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

अग्नि पुष्प जल जंघा जानो, श्रेष्ठ पत्र ऋद्धीधर मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।19।।

ॐ ह्रीं अग्निपुष्पजलजंघा ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

गगन गमन ऋद्धी के धारी, चारण ऋद्धी धर अनगारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।20।।

ॐ ह्रीं गगन गमन चारण ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अणिमा आदि विक्रिया धारी, ऋद्धी धर होते अविकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।21।।

ॐ ह्रीं अणिमा विक्रिया ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

अन्तर्धान विक्रिया पावें, ऋद्धी धारी संत कहावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।22।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान विक्रिया ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

उग्र सुतप ऋद्धी प्रगटाते, उनकी सुर नर महिमा गाते ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।23।।

ॐ ह्रीं उग्र सुतप ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दीप्ति सुतप ऋद्धीधर जानो, तन में कांति जगाते मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।24।।

ॐ ह्रीं दीप्ति सुतप ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

तप्त विशद ऋद्धी प्रगटावें , भोजन क्षण में पूर्ण पचावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।25।।

ॐ ह्रीं सुतप्त ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

साधु महातप ऋद्धी धारी, कर्म निर्जरा करते भारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।26।।

ॐ ह्रीं महातप ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋद्धि घोर तप पाने वाले, साधू जग में रहे निराले।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।27।।

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

घोर पराक्रम ऋद्धी धारी, होते हैं तप वृद्धीकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।28।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

साधू घोर ब्रह्मचर्य पावें, शील व्रतों के धारि कहावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।29।।

ॐ ह्रीं घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

।। पाइता छन्द ।।

मन बल ऋद्धी के धारी, सद् ज्ञान जगावें भारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।30।।

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

बल वचन ऋद्धि प्रगटाते, वे सकल शास्त्र पढ़ जाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।31।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

बल काय ऋद्धि जो पावें, वे अतिशय शक्ति बढ़ावें ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।32।।

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋषि आमर्षौषधि धारी, होते पर रोग निवारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।33।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

क्ष्वेलौषधि ऋद्धि जगावें, जो क्ष्वेल से रोग नशावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।34।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋद्धी जल्लौषधि पावें, जल्ल छूते रुज नश जावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।35।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋषि मल्लौषधि के धारी, का मल हो रोग निवारी ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।36।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋषि विडौषधी धर गाए, करुणा की धार बहाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।37।।

ॐ ह्रीं विडौषधी ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

सर्वौषधि ऋद्धी धारी, की पद रज रोग निवारी ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।38।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

आस्याविष ऋद्धि जगाए, विष भी निर्विषता पाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।39।।

ॐ ह्रीं आस्याविष ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दृष्टी विष ऋद्धी धारी, होते हैं करुणाकारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।40।।

ॐ ह्रीं दृष्टि ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

आशीर्विष ऋद्धि जगाते, ना क्रोध दृष्टि दिखलाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।41।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दृष्टी विष ऋद्धी धारी, के अन्न हो मधु सम भारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।42।।

ॐ ह्रीं दृष्टि विष ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋषि क्षीर स्रावी कहलाते, नीरस जो रस मय पाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।43।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावी ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

मधु स्रावी ऋद्धी धारी, के अन्य हो मधु सम भारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।44।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावी ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

घृत स्रावी ऋद्धि जगावें, घृत सम भोजन को पावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।45।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावी ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋषि अमृत स्रावी गाए,अमृत सम अन्न को पाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।46।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

अक्षीण ऋद्धि प्रगटावें, ना क्षीण भोज हो पावें।
ऋषि जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।47।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहासन ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

अक्षीण महालय पाएँ, लघु जगह में कटक समाएँ।
ऋषि जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।48।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धि धारक ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

ऋषि सर्व ऋद्धियाँ पावें ,जो तप धर ध्यान लगावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।49।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि धारकेभ्यो चतुर्विंशति तीर्थेश्वराग्रिम समयवर्ति द्विपंचाशच्चतुर्दश शत गणधर, एकोनविंशति लक्षाष्ट चत्त्वारिंशत् सहस्र मुनीन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं श्री जिन गणधरेभ्यो नमः ।

जयमाला

गण नायक गणनाथ तुम, गणपति गणधर ईश।
गाएँ तव जयमालिका, चरण झुकाकर शीश।।1।।

(पद्धरि छन्द)

जय जय मुनि श्री गणधर प्रधान, जिनकी ध्वनि सुनते हैं महान।
कई मुनि श्रावक भी सुनें साथ, तव पद पूजें हम नित्य नाथ!।।2।।
तव दर्शन से सब कटें पाप, श्री तीर्थंकर के शिष्य आप।
गणधर मुनि चौंसठ ऋद्धिधार, भविजन को देते श्रेष्ठ सार।।3।।
शुभ द्वादशांग वाणी अपार, रचते गणधर मुनि ग्रन्थसार।
धर बीज बुद्धि ऋद्धी गणेश, चौदह पूरव रचते विशेष।। 4।।
तुम गर्भ जन्म तप ज्ञान युक्त, जिन पूजा भक्ती से संयुक्त।
मन वांछित कारज सिद्ध सार, सुख रिद्धि सिद्धि धर हो अपार।।5।।
तुम कोष्ठ बुद्धि धारी महान, तव पूजन से हो कर्म हान।
तव शरण गही हमने अपार, तुमको पूजें हम बार-बार।। 6।।
मुनि गणधर जिन पूजा रचाय, अरु कर्म निर्जरा फिर कराय।
अक्षीण महानस-ऋद्धि धार, गणधर करते मंगल अपार।। 7।।
हे दीन दयालु कृपा निधान, हमको अक्षय पद दो महान।
तुमसा न कोई दयावान, तुम जिन संतो में हो प्रधान।। 8।।

महिमा का तुमरी नहीं पार, तुम हो भव्यों के कण्ठहार।
हम चरण वन्दना करें नाथ!, तव चरण कमल में झुका माथ।।9।।
हम करें वन्दना चरण आन, दो हमको भी गुरु ज्ञान दान।
तव चरण झुकाते 'विशद' माथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।10।।

दोहा

गणधर गुणपूजा करें, प्राणी भव्य महान।
मन वांछित फल प्राप्त कर, अन्त लहें निर्वाण।।11।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवानां श्री वृषभसेनादि द्विपञ्चाशत् अधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - गणधर की अर्चा किए, होवे पूरी आश।
राही शिवपथ के बनें, करें कर्म का नाश।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

श्री गणधर वलय विधान समुच्चय पूजा

(आचार्य शुभचंद्र प्रणीत)

(उपजातिः)

वसुघ्नषट् ऋद्धिसमृद्धिसिद्धं, यन्त्रं स्फुरन्मन्त्रसुतन्त्रमेव।
संस्थापये श्रीगणधारचक्रं, ज्वरातिसारादिरुजापहारम्।।1।।

ॐ ह्रीं गणधरसमूह अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथस्तवनम्

(वसन्ततिलका)

बुद्ध्यौषधी, रस, सुविक्रियदेशवीर्य-
व्योमक्रियर्द्धितपसा सहितान् मुनीशान्।
सत्केवलावधिमनः परिगान्सुबीज-
सत्कोष्ठबुद्धिपदसारितया प्रसिद्धान्।।1।।
श्रोतृन सुभिन्नसुगवां लघुदूरतोक्ष
स्पर्शश्रवोरसनिका, वरनासिकानाम्।
वेतृन् सुगोचरगणान् दशसर्वपूर्व-
वेतृन् निमित्तकुशलान् स्तुमहे महर्षीन्।।2।।युग्मं।।
प्रत्येक बुद्धवरवादिगणान् प्रधीकान्
बुद्ध्यर्द्धियुक्तिकलितान् द्विनव स्तवीमि।
विट् खिल्लजल्लपरमामसु सर्वतश्च
रोगापहान् वसुविधान् वरदृष्टिचक्रैः।।3।।

(शार्दूलविक्रीडितम्)

कुर्वाते लघु वाग् दृशौ सुभविनां मृत्युं विशेण क्रुधा
यत्पाणावपि दुग्धमध्वमृतसत् प्राज्यप्रभं जायते

(आर्या)

लघिमागरिमामहिमा प्राकाम्यैश्वर्यकामरुपित्त्वै।
व्यधनाप्तिवश्यधातैः स्तौमि मुनीन् विक्रियर्द्धिगतान।।5।।

(शार्दूल विक्रीडितम्)

भुक्तं यत्र दिने गृहे यतिजनैर्न क्षीयते तद्दिने
तच्छेषं च सुभेजितेऽखिल-नरे यत्र स्थितं तत्र ये
सर्वे नाकिनरादयः सुखतया तिष्ठन्ति तुच्छावनौ
तेऽक्षीणादिमहानसालयगुणा-भान्तूभये सर्वतः।।6।।

(उपजातिः)

अन्तर्मुहूर्त्तेन श्रुतं समस्तं, व्यायन्ति ये कण्ठविषादमुक्ताः।
पठन्ति लोकं न्यसितुं क्षमाश्चांगुल्या त्रिधा ते बलिनो भवन्तु।।7।।

(आर्या)

दिविजलदलफलकुसुमबीजाग्निशिखासु जानुपंक्तिगताः।
चारणनामान इमे क्रियर्द्धियुक्तान् नमामि च वैतान्।।8।।

(उपजातिः)

उग्रं तपोदीप्ततपस्तपन्तुं तप्तं तपो घोरतपो महच्च।
ये सप्तधा घोरपराक्रमाश्च ब्रह्माऽपि ते सन्तु विदे त्रिगुप्ताः।।9।।

(वसन्ततिलका)

नानातपोऽतिशयलब्धमहर्द्धिमुख्याः
सूर्यादयो मुनिवरा जगतां प्रयान्तः
कुर्वन्तु ऋद्धिनिचयं शुभचन्द्रकस्य
संघस्य दुष्टदुरितानि हरन्तु सन्तः।।10।।

।। इति गणधरवलयस्तवनं समाप्तम्।।

अष्टक

(द्रुतविलम्बितम्)

विमलशीतलसज्जलधारया, सविधुबन्धुकेशरसारया।
गणधरान् गुणधारणभूषणान्, यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः जलं नि. स्वा.।

मसणकुङ्कुमचन्दनसुद्रवैः सुरभितागुरुमृगमदसद्द्रवैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।2।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः गन्धं नि. स्वा.।

विपुलनिर्मलतन्दुलसंचयैः कृतसुमौक्तिककल्पतरुच्चयैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।3।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः अक्षतान् नि.स्व।

कुसुमचम्पकपंकजकुन्दकैः सहसुजातसुगन्धविमोहकैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।4।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः पुष्पं नि. स्वा.।

सकललोकविमोदनकारकश्चरुवरैः सुसुधाकृतिधारकैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।5।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः नैवेद्यं नि.स्व.।

तरलतारसुकान्तिसुमण्डनैः सदनरत्नमयैरघखण्डनैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।6।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः दीपं नि. स्वा.।

अगुरुधूपगणेन सुगन्धिना भ्रमरकोटिसमिन्द्रियवन्धिना।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।7।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः धूपं नि. स्वा.।

सुखदपक्वसुशोभनसत्फलैः क्रमुकनिम्बुकमोचसुलांगलैः।
गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।8।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः फलं नि. स्वा.।

गणधरान् गुणधारणभूषणान् यज इमान् वसुभेदसुऋद्धिगान्।।9।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नमः अर्घ्यं नि. स्व.।

अथमध्यस्थितषड्देवीपूजा

(इन्द्रवज्रा)

श्रीयं श्रियां श्रीसुतबुद्धिदात्रीं, माहेन्द्रमान्यां परिवारयुक्तां।
चाये गणेन्द्रोज्ज्वलपादभक्ता-मप् चन्दनाद्यैर्जिनमातृरक्ताम्।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री देवि इदमर्घ्यं गृहाण 2 स्वाहा।

ह्रीदां ह्रियंभाक्तिकलोकवर्गे, पद्मे महापद्महृदाधिवासाम्।
चाये गणेन्द्रोज्ज्वलपादभक्ता-मप् चन्दनाद्यैर्जिनमातृरक्ताम्।। 2।।

ॐ ह्रीं ह्री देवि इदमर्घ्यं गृहाण 2 स्वाहा।

धृत्याधृतो ख्यातिगतां महेन्द्रमान्यां तिगिंछे कृतपूर्णवासाम्।
चाये गणेन्द्रोज्ज्वलपादभक्ता-मप् चन्दनाद्यैर्जिनमातृरक्ताम्।। 3।।

ॐ ह्रीं धृतिदेवि इदमर्घ्यं गृहाण 2 स्वाहा।

सल्लोकभोगोत्मसुकीर्तिहेतुं, कीर्तिं जिनेशे कृतकीर्तिभावाम्।
चाये गणेन्द्रोज्ज्वलपादभक्ता-मप् चन्दनाद्यैर्जिनमातृरक्ताम्।। 4।।

ॐ ह्रीं कीर्तिदेवि इदमर्घ्यं गृहाण 2 स्वाहा।

देहात्मनोर्भेदकरप्रबुद्धिं जिनेशभक्तां वरबुद्धिकर्त्रीम्।
चाये गणेन्द्रोज्ज्वलपादभक्ता-मप् चन्दनाद्यैर्जिनमातृरक्ताम्।। 5।।

ॐ ह्रीं बुद्धिदेवि इदमर्घ्यं गृहाण 2 स्वाहा।

लक्ष्मीकरां श्रीजिनशासनस्य लक्ष्मीं लसल्लाभपरां सुलक्ष्मीम्।
चाये गणेन्द्रोज्ज्वलपादभक्ता-मप् चन्दनाद्यैर्जिनमातृरक्ताम्।। 6।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेवि इदमर्घ्यं गृहाण 2 स्वाहा।

(आर्या)

युष्मान् श्रीह्रीधृति च कीर्तिसुबुद्धिप्रसिद्धलक्ष्मीभ्यः।
संमानयामि भक्त्या देव्यः पूर्णार्घतः श्र्याद्याः।। 7।।

ॐ ह्रीं श्रयादिदेव्य इदं पूर्णार्घ्यं गृहाण 2 स्वाहा।

अथ प्रत्येक पूजा

अथ प्रथम वलय पूजा

(अनुष्टुम्)

रसाद्यष्ठ सुऋद्धीशं, भावव्यक्तिकरं परम्।
आह्वाननादिसिद्धयर्थं, क्षिपामि कुसुमाक्षतान्।। 1।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमः अष्टचत्त्वारिंशत्कोष्ठयुक्तयन्त्रोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(उपजातिः)

विसूचिकादोषविनाशदक्षा, विपक्षकर्मान्तकराः समृद्धाः।
सद्देशसाकल्यविदश्च ये तान्, यजामि भूमीश्वरसेव्यपादान्।। 1।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(द्रुतविलम्बितम्)

अवधिबोधवरान् जिननायकान्, ज्वरगदादिकशान्तिकरान्मुनीन्।
जलजचन्दनदीपसुधूपकैरहमिह प्रयजामि जगद्गुरुन।। 2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चतुष्पदिका)

परमावधिनिधिसद्गुणयुक्तान्, जनताऽभयकरशीर्षविरोगान्।
भयनाशनचरणान् जलगन्धैर्भजतां जिनमतिसन्मतिसाधून्।। 3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षिरोगरिपुतापविभेतृन्, लोकमध्यगत मुर्त्तसुद्रव्य-
वेदकान्, प्रवियजे खलुसर्वा-द्यावधीन् जिनवरान् जितपापान्।। 4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी)

श्रुतिगदमदताम्यत्प्राणिमुख्यप्रतातृन्।
प्रणतनिखिलदेवानन्तबोधावधीद्धान्।।
करणकलिकुठारान् पूजिताप्तान् मुनीन्द्रान्।
प्रयज इह सुखाढ्यान् दुष्टकर्मारिहन्तृन्।। 5।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः)

यन्नाममन्त्राज्जनता भवन्ति कुशूलमुख्योदररोगमुक्ताः।
तान् कोष्ठबुद्धीन् जिनपात् जलाद्यै महाभिनार्थविदः समर्थान्।। 6।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोष्ठबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मन्दाक्रान्ता)

हिक्काश्वासप्रहणिगदजिद्भावरूपा यतीन्द्राः
सद्बीजं ये प्रमदमदहाः प्राप्यशास्त्रस्य नूनम्।
जानन्तीह त्रिजगति गतं सर्वलोकार्थसार्थं
शास्त्रं भक्त्या यतिवरतरान् बीजबुद्धीन् यजामि।। 7।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः)

पदं समाश्रित्य विदन्ति शास्त्रं विनाशयन्तश्च परस्परोत्थम्।
वैरेंयके तान् प्रयजे यतीशान् सद्वादशांगीयपदानुसारीन्।। 8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप्)

इति पूर्णार्घसंपन्ना जिनावथिमुखा जिनाः।
पदानुसारिपर्य्यन्ता भवन्तु भवशान्तये।। 9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणप्रभृति पदानुसारिपर्यन्तर्द्धि प्राप्तेभ्यो गणधरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीय वलय पूजा

(उपजातिः)

संभिन्नशब्दश्रुतिपेशला ये, गजाश्वमानुष्यमहांगिशब्दम्।
पृथग् विदन्तो नरकासहन्तॄन्, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 1।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवित्ववादित्वविधायिनो ये, तत्सेवकानां निरपेक्षबुद्धया।
गुरोर्गिरि प्राप्तमहानुभावा, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवीक्ष्य चोल्काभ्रगणप्रयातं, बुद्धाः प्रशस्ताः सुखकारिणश्च।
प्रवादिविद्यामदभेदिनो ये, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यै।। 3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हितादिभाषाकुशलैरुपायैर्, ये ज्ञाततत्त्वाबुधबोध्यमानाः।
चौरादिभीतिपरिपन्थिनश्च, यायज्म्यहं तान् जलचंदनाद्यैः।। 4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमर्थ्यलोकस्थितभाव वेतॄनृजुप्रचेतः स्थितयावबुद्धया।
शांति जनानां विधिवद्विधातॄन्, यायज्म्यहं तान् जल चंदनाद्यैः।। 5।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कौटिल्यचेतोगतभाववेतॄन्, मनुष्यलोके बहुशास्त्रदातॄन्।
चतुर्थबोधान् बहुभाक्तिकानां, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 6।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्तशास्त्रार्थविदो मनुष्या, येषां प्रभावादृशपूर्ववेतॄन्।
भवांगभोगेषु विरक्तचित्तान्, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 7।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

येषां प्रभावात् स्वपरार्थशास्त्र, वेत्ता भवेन्ना सकलार्थवेदी।
चतुर्दशापूर्वसुपूर्वविज्ञान्, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदन्ति भूव्योमनिनादलक्ष्म, स्वरव्यंजनच्छिन्नशरीररूपं।
ये कुर्वते जीवितमृत्युवित्त्वं, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगनिमित्तकुसलाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियर्द्धिलघिमागरिमाणिमार्दि, प्राप्ताः सुकाम्याप्तिकरा नराणां।
मुनीश्वरान् सामविधौ समर्थान्, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इड्ढिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुलागतश्रीगुरुदत्तविद्याः पाठेन सिद्धाश्च तपः प्रसिद्धाः।
येषां नृभोगन्तकृता नराणां, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 11।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्पादभक्तो नर एव वस्तु, सुमुष्टिगं चित्तगतं च वेत्ति।
तच्चारणान् निर्गतभूमिचर्यान्, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 12।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये सांगपूर्वश्रुतसारबुद्धाः समायुषोऽन्तादिविदा नरेण।
सेव्याः समस्तार्थविदः समिद्धाः, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 13।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्नोव्रजन्त्यम्बर देश एव, कुयोजनं यन्मुनिपाद संगात्।
हितानभश्चारिण एव मुख्यान्, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 14।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासभामीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंष्ट्रादिपीडां कथमप्यमास्त, द्वेषा विदध्युप्रियतां स्वयं ये।
विद्वेषणं वारयतो रिपूणां, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 15।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यद्दृष्टिमात्रेण नरा म्रियन्ते, ये ध्वन्ति हालाहलकं च नृणाम्।
उच्छेदयन्तो भुविशोकमेकं, यायज्म्यहं तान् जलचन्दनाद्यैः।। 16।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आर्या)

दृष्टिविषान्ता मुनयः संभिन्नश्रोतृतः समारभ्य।
पूर्णार्घैः परिचरिताः संघस्य श्रेयसे सन्तु।। 17।।

ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्नश्रोतृप्रभृतिदृष्टिविषान्तर्द्धिप्राप्तेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीय वलय पूजा

(आर्या)

विदधति वाचांस्तम्भं कुधियां संसारभावनिर्विण्णाः।
नानोग्रतपस्तप्तास्तेषामिहपूजनं विदधे।। 1।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी)

विदधति किरणा हि ध्वान्तनाशं परं वै।
विविधमिह यतीनां सत्तपः प्राप्तभानाम्।।
विदधति खलु नृणां स्तम्भनं सद्वलस्य।
शुचिरुचिजलमुख्यैः पूजये तान् मुनीन्द्रान्।। 2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्त तिलका)

संतप्तलोहगतवारिवदत्र देहे।
भुक्तान्नमेव विलयं सहसा प्रयाति।।
शान्त्यग्निदीप्तिकरवारणमेव नृणां।
चाये मुनीन् सुखदतप्ततपः प्रभावान्।। 3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक)

षष्ठाष्टपक्षादितपः प्रभावा, ये क्षीणदेहा बहुभिस्तपोभिः।
स्तभनन्ति पाथोवरमन्त्रपुंसां, तान् संभजे सच्चरितान् मुनीशान्।। 4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महात्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

क्रोधोद्धतैर्हरिगणै र्न हि विक्रियन्ते।
ये योगिनो मतियुताः सुविशुद्धभाजः।।
क्ष्वेडाऽऽस्य रोगफणिबन्धनशान्तिहेतून्।
भेजे यतीन् परमघोरतपोऽभियुक्तान्।। 5।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक)

ये यतयो जठरात्तिविरागैर्नो विरताः स्वगुणैः शमयन्ति।
काचसुकामलचिल्लकलूता योगिवरान् भज घोरगुणांश्च।। 6।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः)

येषां पराक्रान्तिरिह प्रसिद्धा विभेदने कर्मरिपोः स्वरूपे।
पंचास्यभीतिप्रतिभेदिनस्तान् वृत्तैर्यजे घोरपराक्रमाश्च।। 7।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंक्ति छन्दः)

ये विषहन्ते देवगणेत्थं, सिंहजमूर्मिगणं सुमहान्तः।
भूतप्रेतपिशाचसुभीतिं संविभजे तान् चारणदक्षान्।। 8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः)

आमौषधीशाः सकलस्य जन्तो रुजोनिवारं विदधत्यवश्यं।
जन्मान्तरीया हितवैरनाशं संपूजये तान् मुनिनायकांश्च।। 9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आर्या)

येषां निष्ठीवनतो रोगा, नाशं प्रयान्ति मनुजानाम्।
अपमृत्युनाशकांस्तान्, प्रभजे खेलौषधिं प्राप्तान्।। 10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मन्द्राकान्ता)

चेतो जातं प्रथमपनुदत्पाशुजन्तुः प्रभावाद्।
येषां व्यालप्रमुखविमुखः सम्मुखो जायते वै।।
सर्वांगीणं मलमपि नृणां हन्ति यद्रोगजालं।
चेक्रीयेऽहं यतिवरतरान् मन्दकन्दाभियुक्तान्।। 11।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

यद्ब्रह्मविन्दुभिरपि प्रथिमान एव।
रोगाः क्षिणन्ति विषमा बहुदुः खदावैर्।।
यन्नाममन्त्रनिचया मरकीं गजानां।
चाये रसादिनिचयैर्मुनिमुख्यपादान्।। 12।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक)

दन्तनखादिमलं मनुजानां, रोगगणं हरते च यदीयं।
वृश्चिकनागविषं नरमारीं, पूजय तान् शमकान् वरमन्त्रैः।। 13।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः)

येऽन्तर्मुहुर्तेन विदन्ति शास्त्रं, हृदाश्रमातीतहृदः समस्तं।
तुरंगमारी प्रलयं प्रगच्छेद्, भेजे च तान् मानससत्त्वसारान्।। 14।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक)

यद्वाचो निखिलं श्रुतवार्द्धिमश्रान्तं गदितुं सुसमर्थो।
मेषमृतापहनो मुनिमुख्यान्, गीर्बलिनो भज भोगसुभेत्तृन्।। 15।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शार्दूलविक्रीडितम्)

लोकं चालयितुं क्षमाः शममयास्तीव्रव्रतभ्राजिनो।
येऽङ्गुल्या सुरभूधराब्धिसहितं श्रान्तातिगा योगिनः।।
गोमारीं त्वरितं हरन्ति मनुजा यन्नामतस्तान् भजे।
संप्राप्तान् गुरुगात्रसत्त्वममलं शार्दूलविक्रीडितम्।। 16।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक)

येषां पाणिपुटे गतमन्नं, विषमपि दुग्धतया प्रभवेच्च।
कुष्ठक्षयगदगण्डकमाला, तापहरान् प्रयजे मुनिमख्यान्।। 17।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(लीलाखेल)

येषां पाणावन्नं मुक्तं सर्प्पिःशुद्धं संयाति।
एक द्वित्र्यन्तः सत्तापंशामं शामे सल्लोकाः।।
चान्तर्मुक्तं सेवन्ते वै सातं सारं य भक्ताश्।
चाये तान् वै पानीयाद्यैः कामक्रीडानिर्मुक्तान्।। 18।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

यत्पाणिपात्रगतमन्नमपि क्षणेन्।
माधुर्यतां व्रजति सज्जनतासमानम्।।
पित्तादिदूषणहरान् प्रयजामि भक्त्या।
तान् योगिनो मधुरभक्तिकृतो विविक्तान्।। 19।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

येषां वचोऽमृतमिव प्रगुणं च भोज्यं।
पाणिस्थितस्मृतिरपि प्रथयत्यमोघम्।।

सर्वोपसर्गहरणान् भुवि भाक्तिकानां।
तान् सन्धिनोमि रसगन्धमुखैः सुभव्यैः।। 20।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी)

यतिवरजनमुख्यैः यत्र भुक्तं गृहेषु।
नरपतिपशुवृन्दैर्भुक्तमन्नं न याति।।
क्षतिमपि दिवसे वै तत्र योषिद्वशं वै।
विदधति नरनाथा यत्प्रभावाद् भजे तान्।। 21।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

श्रीवर्धमानविभवा धृतबर्द्धमानाः।
सद्वर्द्धमानमनुजान विदधत्यवश्यं।।
ये संश्रितान् सुगतिसाधनबर्द्धमाना।
वर्द्धामियामि जलजैर्मुनिनाथपादान्।। 22।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो णमोवद्धमाणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आर्या)

नृपतिवशमेति पुंसां, विनता यन्नामतः सद्यः।
सिद्धायतनान् भक्त्या, परिसेवे तान् जलप्रमुखैः।। 23।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवति महति सुवीरे, शुद्धे बुद्धे सुवर्द्धमानाङ्के।
त्वयि नमतां सिद्धिचयः, संविभजाम्यंघ्रियुगलं ते।। 24।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदोमहदि महावीर वड्ढमाणबुद्धिरिसीण अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(दोधक छन्द)

उग्रतपः प्रभृतिप्रभु-भगवन्महदादिनामपर्यन्ताः।
पूर्णार्घंमापिता वः शिवदास्तु महर्षयः सन्तु।। 25।।

ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपः प्रभृतिमहावीर वड्ढमाण पर्यन्तर्द्धि प्राप्त गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

सर्वानृषीन्निखिलतापहरान् भजामि।
पूर्णार्घदानवशतः परमान्यचित्तान्।।
निःशेषशोकगुरुतापहरान् परांश्च
संसिद्धिवृद्धिवरबुद्धिसमृद्धिदातॄन्।। 26।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं 2 नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(यहाँ गोला/नारियल चढ़ाऐं)

(जपमन्त्रः)

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं 2 नमः।

अथ जयमाला

(घत्ता)

जय-जय गणधारण, दुरितनिवारण, पापभीतिमददारणकं।
वसुकर्धिऋद्धीश्वर, परममुनीश्वर, पंचभेदभववारणकं।। 1।।

(पद्धड़ि छन्द)

जय पापतापजलदप्रकाश, जय मोहमानरतिभीतिनाश।
जय सारवार भुवि विद्विलास, जयभावनष्ट बहुमोहपाश।। 2।।
जय पुत्रमित्रधनदस्वभाव, जय मुक्तदोषमदमन्द्यभाव।
जय लोकशोकहरणार्थराव, जय कर्ममर्मवनवारदाव।। 3।।
जय सार्वभौमनुतपुण्यपाद, जय नष्टदुष्टवचनापवाद।
जय युक्तियुक्तहतदुः प्रमाद, जय नीतिवीतकुमताद्यवाद।। 4।।
जय सप्तऋद्धिकृतसिद्धिसंग, जय तत्त्वसंगिसुगवां कुरंग।
जय वाप्ततप्तनवभोगभंग्थ, जय कीर्तिपूर्तिसतताप्तरंग।। 5।।
जय रामकामरमणीयरूप, जय शक्तिचित्तरसभोगभूप।
जय तूर्णतीर्णसुमदान्धकूप, जय सिद्धबुद्धनचित्स्वरूप।। 6।।
जय योगिवर्गकृतपादसेव, जय नम्रकम्ररमणीसुदेव।
जय सुप्रमाणपदपाद्यजीव, जय पूर्णवर्णशुभरुक्सदैव।। 7।।
जय चित्तवित्तवशकारमन्त्र, जय नाशनाप्तभवपातयतन्त्र।
जय धामनाममितयुक्तितन्त्र, जय दीप्ततप्ततपसापवित्र।। 8।।
जय मारवारमदहारदक्ष, जय सर्वपूर्वधृतभव्यरक्ष।
जय बुद्धिबुद्ध बुधसिद्धपक्ष, जय मूर्तमूर्तिविकसत्समक्ष।। 9।।
जय देहदीप्तिहत सत्तमिश्र, जय दिव्यनव्यवरयोगिमश्र।
जय खेदभेदमदतामसास्त्र, जय वीर्यवर्ये गुणसूर्यघस्त्र।। 10।।

जय कोष्टबुद्धिगत वृद्धयोग, जय जल्लखिल्लहतविश्वरोग।
जय बीजबुद्धिविततात्मयोग, जय चित्तदेहरवनिर्वियोग।। 11।।

(मालिनी)

इति यतिपतिभावाः कर्मकक्षान्तदावाः
गणधरगणमुख्याःप्राप्तजीवाधिरक्षाः
धनजनशुभचन्द्रा ध्वस्तमोहारितन्द्रा
भवतु सुखसमृद्धय यूयमेवात्र सिद्धयै।। 12।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं 2 नमः
जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

आयुः सुकायमतिसन्ततिमुक्तिवित्ति-
सौभाग्यभाग्यसुगतित्त्वसुसंगतश्च
चक्रेन्द्रभोगिजिननाथपदानि नित्यं
भूयासुराशुगणनाथपदप्रसादात्।। 13।।

(इत्याशीर्वादः)

अथ पूजाकारकस्य प्रशस्तिः

(वसंततिलका)

कृत्त्वाजकर्मदहनोज्ज्वलसद्धुतं च
चिन्तामणीयमभारतपूजनं च
त्रिंशच्चतुः समधिविंशति पूजनं च
श्री शुद्धसिद्धशुभपूजनमेव भक्त्या।। 1।।

श्रीमद्गणेश्वरसमुज्ज्वलपूजनं च।
श्री ज्ञानभूषणपदे विजयादिकीर्तिः।।
पट्टे चकार शुभचन्द्र इति प्रसिद्ध
सत्सिद्धिवृद्धिमतये लघुतः सुभक्त्या।। 2।।

इति श्रीशुभचन्द्राचार्यविरचिता विशद सिन्धु संकलिता गणधरवलयपूजा समाप्ता।